REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

कालेधन की अर्थव्यवस्था और विमुद्रीकरण का प्रभाव

धरवेश कठेरिया[1] , भरत पंडा[2] , अविनाश त्रिपाठी[3] , पदमा वर्मा[4] , नीरज कुमार सिंह[5] , अनुराधा[6]
[1]सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[2]सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[3,4]एम. फिल. शोधार्थी, जनसंचार विभाग (2016-17), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[5] एम. फिल. शोधार्थी, सामाजिक वहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केंद्र (2016-17),काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश।
[6]शोधार्थी एम. ए., जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

सारांश

कालेधन की अर्थव्यवस्था ने पूरे देश को जकड़ रखा है और अवनति की ओर ले जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ भ्रष्टाचार और नकली नोटों की कालाबाजारी से बढ़ती आतंकी गतिविधियां और आपराधिक घटनाओं ने देश में हलचल मचा दी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में इन्हीं घटनाओं को ध्यान मेंरखते हुए विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में प्रकाशित खबरों के विश्लेषण के आधार पर कहें तो विमुद्रीकरण ने देश की अर्थव्यवस्था के विकास में रुकावट पैदा करने वाली समस्याओं पर सीधे वार किया है। हालांकि इस फैसले से पूरा देश सकते में आ गया है परंतु अर्थव्यवस्थाके विकास में यह कदम आवश्यक है।

शब्द कुंजी: विमुद्रीकरण, नकली/जाली नोट, सर्जिकल स्ट्राइक:

उपकल्पना

- विमुद्रीकरण से नकली नोटों के प्रचलन में कमी आई है।
- विमुद्रीकरण से बाजार में रुपयों का प्रसार बढ़ा है।
- भ्रष्टाचार, अपराध एवं नक्सली गतिविधियों पर रोक लगी है।

उद्देश्य

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए कुछ उद्देश्य तय किए गए हैं जो इस प्रकार है

- भारत में 2016 विमुद्रीकरण के बाद की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
- विमुद्रीकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव को जानना।
- विमुद्रीकरण के माध्यम से लोगों में बढ़ीजागरूकता का अध्ययन।
- विमुद्रीकरण के प्रति आम लोगों की दृष्टि का अध्ययन।

शोध सीमाएं

शोध अध्ययन विषय 'कालेधन की अर्थव्यवस्था और विमुद्रीकरण का प्रभाव' के सीमा के अंतर्गत8 नवंबर, 2016 को हुए विमुद्रीकरण के बाद की समय को लिया गया है। इसमें अंतर्वस्तु विश्लेषण हेतु8 नवंबर, के बाद विमुद्रीकरण पर प्रकाशित समाचारों, लेखों,

रिपोर्टों एवं विशेषज्ञों के विचारों आदि को शामिल किया गया है। साल 2016 के अंत तक विमुद्रीकरण पर प्रकाशित महत्वपूर्ण खबरों का अध्ययन किया गया है एवं विमुद्रीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक जन जीवन व अंतिम रूप में कालेधन पर पड़ने वाले प्रभाव के महत्वपूर्ण खबर को शामिल किया गया है। इस शोध में समाचार पत्रपत्रिकाओं एवं अन्य के ऑनलाइन संस्कारण को भी शामिल किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन

प्रस्तुत शोध कार्य विषय: 'कालेधन की अर्थव्यवस्था और विमुद्रीकरण का प्रभाव' को स्वरूप प्रदान करने के लिए प्रकाशित पुस्तकों, पत्रिकाओं, रिपोर्ट, शोध लेख एवं उपलब्ध अन्य साहित्य सामाग्री का अध्ययन किया गया है।

पुस्तक

- **सिंह, रामपाल, और कुमार, धर्मेन्द्र. (2008). *अर्थशास्त्र शिक्षण*. मेरठ: राज प्रिंटर्स।**

अर्थशास्त्र एवं सामाजशास्त्र दोनों ही विषय एक दूसरे से जुड़े हैं। इसके अंतर्गत समाज में रहने वाले व्यक्तियों की क्रियाओंका अध्ययन शामिल होता है। प्रस्तुत पुस्तक में अर्थव्यवस्था का महत्व, अर्थव्यवस्था की विकास प्रणाली, भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना, वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था के विचारणीय विषय आदि प्रमुख शीर्षकों पर प्रकाश डाला गया है।

- **यादव, बी. एस., तबस्सुम, के., और मसूद, एच. (2008). *आर्थिक विकास एवं नियोजन*. नई दिल्ली: यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।**

प्रस्तुत पुस्तक में अर्थव्यवस्था के विकास के विभिन्न पहलुओं एवं नियोजन पर प्रकाश डाला गया है। इसमें बताया गया है कि कैसे अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जा सकता है, और कैसे आर्थिक विकास की योजना बनाई जा सकें। आर्थिक विकास का अर्थ, अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रों में उत्पादकता आदि को स्पष्ट किया गया है।

शोध पत्रिका

- **Kaur, Sandeep (2016): "Demonetization and Its Impacts in India," international journal of research, Vol 3, No 17**

  विमुद्रीकरण मुद्राओं के विशेष प्रारूपों के निष्कासन की व्याख्या करता है। जब भी देश की मुद्राओं को बदलाव होता है विमुद्रीकरण की जरूरत पड़ती है। विमुद्रीकरण का जनता पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रकार का प्रभाव पड़ा, इस पर पत्रिका में ज़ोर दिया गया है।

- **Kanchan, (Nov. 2016): "INDIA DEMONETIZES CURRENCY AFTER 36 YEARS: REVIEW," international education and research journal, Volume 2, Issue 11**

  विमुद्रीकरण अर्थशास्त्र की एक ऐसी अवधिसमय होती है जिसमें पुरानी मुद्राओं को कानूनी तरीकों से बदल दिया जाता है अर्थात एक नया नोट देश की अर्थव्यवस्था में जोड़ा जाता है। सरकार के इस फैसले पर देश में कुछ लोगों ने सहमती जताई तो कुछलोगों ने विरोध भी किया।

शोध आलेख

- **प्रसाद, पूजा (2017): "नोटबंदी के असर से परेशान अर्थव्यवस्था व आम आदमी बजट में चाहिए राहत," NDTV इंडिया ब्लॉग, 2017**

प्रस्तुत अलेख में पूजा प्रसाद ने 2017 के बजट पर नोटबंदी के प्रभाव को समझाने का प्रयास किया है। इनके अनुसार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 8 नवंबर, 2016 को 500 रुपए और 1000 रुपए के नोटों को अमान्य घोषित करने (विमुद्रीकरण) के घोषणा के बाद से देश में जो उथल-पुथल मची उस पर ध्यानाकर्षित किया गया है।

पत्रिका

- **सिरोठिया, राजेश (30 jan, 2017): "सहकारिता के मकड़जाल में नोटबंदी का जंजाल," आउटलुक, पेज नं. 14**

नोटबंदी से सहकारी बैंकों में हुआ पैसों का अभाव किसानों को नहीं मिल रहा है कर्ज, इस उपशीर्षक से लेख की प्रस्तुती की गई है जिसमें नोटबंदी का किसानों पर प्रभाव का वर्णन किया गया है। इसमें मध्यप्रदेश के सहकारी बैंकों कीस्थिति को बताया गया है।

- **Forbes, Steve (DEC 22, 2016): "What India Has Done To Its Money Is Sickening And Immoral," Forbes India Magazine, (https://www.forbes.com/sites/steveforbes/2016/12/22/what-india-has-done-to-its-money-is-sickening-and-immoral/#1571e29817f5)**

यह बिजनेस और आर्थिक विकास के समाचारों के विश्लेषण की एक महत्वपूर्ण पत्रिका है। लेख में कहा गया है कि भारत सरकार ने एक झटके में ही 85% मुद्रा को प्रचालन से बाहर कर दिया, यह साहस भरा कदम है।

रिपोर्ट-

- **Forbes India, (11 march, 2017). Demonetisation - The long and short of it (report). (http://www.forbesindia.com/blog/economy-policy/demonetisation-the-long-and-short-of-it/)**

सन 1946 और सन 1978 में 5000 और 10,000 के नोटों का विमुद्रीकरण किया गया इसलिए भारत में विमुद्रीकरण कोई नई बात नहीं है। उस समय कुल मुद्राओं का अनुपात0.6% था। जबकि आज कुल 85% है। इस रिपोर्ट में विमुद्रीकरण के थोड़े समय और लम्बे समय के बाद के प्रभाव की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

- **HDFC Bank Investment Advisory Group, (November 11, 2016). Demonetization and its impact (report). (https://www.hdfcbank.com/assets/pdf/Event_Update_Demonetization_and_its_impact.pdf)**

विमुद्रीकरण के बाद के प्रभाव का अध्ययन इस रिपोर्ट में किया गया है। जिसमें500 और 1000 के नोटों के विमुद्रीकरण के बाद लोगों के आम जीवन पड़ने वाले व्यापक प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत अध्ययन विषय- 'कालेधन की अर्थव्यवस्था और विमुद्रीकरण का प्रभाव' को प्रारूप प्रदान करने के लिए गुणात्मक एवं मात्रात्मवक दोनों प्रकार के विधियों का प्रयोग किया गया है। इन प्रविधियों की सहायता से विषय को एक निश्चित आकार दिया गया है। शोध को पूर्ण रूप देने के लिएउपयोग किए जाने वाली कुछ प्रविधियों का विवरण इस प्रकार है-

- **अंतर्वस्तु विश्लेषण:** शोध अध्ययन के लिए विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं, लेखों, विशेषज्ञों के विचार, विमुद्रीकरण पर सरकारी दस्तावेज़, रिपोर्ट्स, विमुद्रीकरण के दौरान बैंकों द्वारा प्रकाशित शोध रिपोर्ट, साक्षात्कार आदि को अंतर्वस्तु विश्लेषण हेतु शोध में शामिल किया गया है।
- **अवलोकन पद्धति:** अध्ययन को मूर्त रूप देने के लिए उद्देश्यपरक अवलोकन के अंतर्गतCNBC आवाज़ के प्राइम टाइम में प्रसारित किए गए विमुद्रीकरण पर आधारित कार्यक्रमों काभी अध्ययन शोध को पूर्ण करने के लिए किया गया है।

प्रस्तावना:

विकासशील देश भारत अभी भी अपने आधारभूत क्रियाकलापों में विकास की राह तलाश रहा है। एक समय भारत को सोने की चिड़िया वाला देश कहा जाता रहा है परंतु अब उस देश की मजबूती का अनुमान उसके लगातार गिरते आर्थिक वृद्धि दर से लगाया जा रहा है। देश की उन्नति व प्रगति उसकी आर्थिक मजबूती ही तय करती है। लगातार गिरते इस वृद्धि दर से आने वाले समय मेंदेश की अर्थव्यवस्था की प्रगति पर सवाल खड़ा करती है। अर्थव्यवस्था में दो तरह की मुद्रा संचारित होती हैं जिसमें एक है सफ़ेद मुद्रा(white money) जबकि दूसरी है कालाधन(black money)। सफ़ेद धन से तात्पर्य वैध तरीके से कमाए धन है जो देश में सरकार के निरीक्षण में प्रसारित होता हैं जबकि कालाधन सरकार के नज़रों से बचाकर अवैध तरीके से अर्जित किया गया धन होता है, जो बैंकिंग प्रणाली या सरकारी रिकॉर्ड में कभी नहीं आ पाते और धीरे-धीरे पूरे देश की अर्थव्यवस्था को अंदर ही अंदर खोखला करते हैं। यह भी देश की आर्थिक

उन्नति के साथ साथ विकसित होते चले जाते हैं। कालेधन की अर्थव्यवस्था ने न केवलआर्थिक विकास को वरन विकास के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। भारत में कालेधन को दीमक की संज्ञा दी जा सकती है जो पूरी अर्थव्यवस्था को अंदर ही अंदर खा जाती है और हमें पता ही नहीं चलता। समाज में निम्न एवं सामन्य वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक के आर्थिक विकास में जिस समानता को स्थापित करने का प्रयास सरकार कर रही है, वह कालेधन की अर्थव्यवस्था के साथ संभव नहीं हो सकता। कालाधन सरकार की योजनाओं और राष्ट्रीय आय में व्यवधान उत्पन्न करता है। "इसकी विकरालता का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि 1989 में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी ने एक बार कहा था कि यहाँ एक रुपए में सिर्फ 15 पैसा ही विकास कार्य में खर्च होता है। शेष पैसा कालाधन का रूप धारण कर लेता है।"

8 नवंबर, 2016 को कालेधन पर लगाम कसने हेतुसरकार ने सरहनीय कदम उठाए। जिसके तहत 8 नवंबर, रात 12 बजे के बाद से बड़े नोटों 500 और 1000 के नोटों का विमुद्रीकरण किया गया अर्थात पूरी तरह समाप्त कर दिया गया। उस समय ये नोट केवल एक कागज के टुकड़े से ज्यादा कुछ भी नहीं रहे थे। देश में प्रसारित कुल मुद्रा का86% नोट प्रचालन से बाहर हो गए। विमुद्रीकरण करने का एक मात्र उद्देश्य अवैध तरीके से जमा किए गए बड़े नोटों को खत्म करना या बाहर निकालना था। पूरी तरह से गोपनीयता के साथविमुद्रीकरण की योजना की गई थी जो काफी हद तक सफल रही क्योंकि कुल बड़े नोटों का 99% मुद्रा सरकारी सिस्टम यानि बैंकिंग प्रणाली में वापस आ गए। देश के आम लोगों के सहयोग और साहस से ही यह पूरी प्रक्रिया ठीक तरह से संभव हो सकी। कालेधन के अर्थनीति पर वार के साथ ही देश में भ्रष्टाचार, नकली नोट और आतंकवाद की बढ़ती घटनाओं को भी विमुद्रीकरण ने काफी हद तक प्रभावित किया है। जैसा कि ज्ञात है देश का विकास उसके अर्थव्यवस्था के एक समान रूप से प्रसार से संभव है इसके विपरीत स्थिति में देश की अर्थव्यवस्था की गति मंद हो जाएगी। अतः भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में छिपे कालेधन को बाहर निकालने हेतु सर्जिकल स्ट्राइक की नीति अर्थात 8 नवंबर, 2016 को किए गए विमुद्रीकरण की नीति को अपनाया है।

1. नकली नोट से छुटकारा:

नगद आधारित अर्थव्यवस्था वाले देश में नकली नोटों की कालाबाजारी करना आम बात हो गई है, यह देश की अर्थव्यवस्था को दीमक की तरह धीरे-धीरे खोखला कर रही है। उच्च मूल्य वर्गों के नकली नोट बाज़ार में अपनी पैठ जमा चुके हैं। परंतु सरकार द्वारा उठाएए विमुद्रीकरण के कदम से बाज़ार में प्रचलित नकली नोट पानी हो गए। सरकार के अनुसार विमुद्रीकरण के बाद देशमें 11,23,62,980 रुपए मूल्य के नकली भारतीय करेंसी नोटों का पता लगाया गया है।भारतीय रिजर्व बैंक ने नकली नोटों का पता लगाने एवं उन्हें जब्त करने हेतु परिपत्र भी जारी किए थे जिस पर कार्य चल रहा है। खबरों के अनुसार500 और 1000 के नोट बंद होने के बाद पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में बांग्लादेश की सीमा पार कई गांवों की अर्थव्यवस्था नष्ट हो गई जिनके आय का प्रमुख साधन नकली नोटों का कारोबार था। वे सीमा पार से नकली नोट लाकर देश के अलग-अलग कोनों में भेजते थे। एनआईए की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था में व्याप्त लगभग 80 % जाली नोट मालदा से लगी बांग्लादेश सीमा से होकर ही आए थे। उनके अनुसार नकली नोटों की सबसे ज्यादा कालाबाजारी पाकिस्तान में होती है। यह नोट समुद्री रास्ते से बांग्लादेश होते हुए भारत पहुंचाए जाते थे। नेशनल क्राइम रिपोर्ब्यूरो में कहा गया कि सुरक्षा एजेंसियों ने साल 2012 से 2014 के दौरान देश भर में 125 करोड़ मूल्य के नकली नोट बरामद किए थे। साल 2013 में सुरक्षा एजेंसियों ने 1.4 करोड़ के जाली नोट जब्त किए तथा साल 2014 में यह आकड़ा 1.5 करोड़ और साल 2015 में 3 करोड़ तक पहुँच गया। इस तरह पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित खबरों के अनुसार देखा जाए तो8 नवंबर, के विमुद्रीकरण के बाद देश में नकली नोटों की प्रसारण संख्या में कमी आई है।

2. आतंकवादी गतिविधियों पर रोक:

देश में बढ़ते आतंकी गतिविधियों ने सामाजिक गतिविधियों को काफी हद तक प्रभावित किया है। आय दिन के खबरों में प्रकाशित आतंकी घटना से देश की हालत बिगड़ती चली जा रही है। आय दिन जवानों के शहीद होने की खबरें चिंतनीय है। जिस परकाबू पाने हेतु आवश्यक कदम उठाना ही चाहिए था। देश में प्रचलित500 और 1000 के मुद्राओं में नकली नोटों की मात्रा अधिकाधिक व्याप्त थी। इन नकली नोटों का इस्तेमाल आतंकवादी संगठनों में किया जाता है।इस कदम से ऐसे आतंकी संगठनों को अपने हथियार निधि के लिए कालाधन मिलना बंद हो जाएगा। विमुद्रीकरण से ये नकली नोट पूरी तरह से समाप्त हो गए, इसलिए राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से यह फैसला

सहीं रहा। हालांकि हालात सामान्य होने पर फिर से नकली नोट छापे जाने का अनुमान भी लगाया जा रहा है। बैंक द्वारा पूरी नज़र रखे जाने के वजह से आतंकी संगठन पैसे निकालने के लिए अब बैंक भीनहीं जा सकते।

3. भ्रष्टाचार, जमाखोरी एवं अपराधिक कार्यों पर रोक

देश में व्याप्त भ्रष्ट लोगों की संख्या में कमी नहीं है जो कालाधन अपने घरों में छिपा कर रखते हैं। टैक्स से बचने के लिए अवैध तरीके से कमाए गए धन को कालाधन कहा जाता है। नकली नोटों की जमाखोरी और उसी पैसे से आपराधिक घटनाओं को अंजाम देने में जाली नोटों का अधिकाधिक इस्तेमाल किया जाता रहा है। अवैध तरीके से अर्जित किए गए धन को कोई भी व्यक्ति बैंक में जमा नहीं कर सकता और विमुद्रीकरण के बाद उस व्यक्ति के पास दूसरा कोईरास्ता नहीं बचता जिस कारण से वह कालाधन समाप्त हो जाता है। इस कारण से कालाधन से रहित देश की अर्थव्यवस्था में मुद्राओंके प्रसार में पारदर्शिता बढ़ी है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण:

प्रस्तुत विषय 'कालेधन की अर्थव्यवस्था और विमुद्रीकरण का प्रभाव' में 8 नवंबर, 2016 को हुए विमुद्रीकरण के पश्चात प्रकाशित हुए खबरों एवं रिपोर्टों को अध्ययन का आधार बनाया गया है। इसमें दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, इक्नोमिक्स टाइम्स, जनसत्ता समाचारपत्रों के ई-संस्कारण को शामिल किया गया है, उस समय प्रकाशित पत्रिका इंडिया टुडे, आउटलुक और Forbes के ई-संस्कारण का भी विश्लेषण किया गया है एवं रिपोर्टों में आरबीआई और एचडीएफ़सी बैंक की रिपोर्ट का अध्ययन शामिल हैं।

शोध निष्कर्ष:

- आधे से अधिक जनता का सरकार के फैसले के पक्ष में होनाही विमुद्रीकरण के फैसले को सार्थक बनाता है।
- देश में प्रचलित नकली नोटों की संख्या में कमी आई है।
- आपराधिक गतिविधियों में कमी देखने को मिली रही है।
- भ्रष्टाचार और कालेधन जमा करने वालों पर लगाम लगी है।
- विमुद्रीकरण से जाली नोटों के नष्ट होने से आतंकवादीगतिविधियों में गिरावट आई है।
- विमुद्रीकरण से डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा मिला है।

शोध सुझाव:

शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा रहे हैं-

- भारत में डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए उच्च स्तर के तकनीकी विकास पर ध्यान दिया जाएसाथ ही डिजिटल पेमेंट में सख्त साइबर सुरक्षा कानून को और बेहतर बनाने की आवश्यकता है।
- भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त नियम बनाए जाए।
- कालेधन जमा करने और नकली नोटों की कालाबाजारी करने वालों के लिए कड़े से कड़े नियम बनाए जाए।
- टैक्स चोरी करने वालों के लिए कड़े प्रावधान हों।
- बहुत से लोग डिजिटल भुगतान को सुरक्षित नहीं समझते, अतः उन्हें इस संदर्भ में प्रशिक्षण देना चाहिए।

शोध की उपयोगिता:

प्रस्तुत अध्ययन विषय- 'कालेधन की अर्थव्यवस्था और विमुद्रीकरण का प्रभाव' के माध्यम से विमुद्रीकरण क्यों किया गया? और इसके क्या लाभ हो सकते हैं? इस पर अध्ययन किया गया है। आज देश भ्रष्टाचार, अपराध, आतंकवाद तथा अन्य अवैध गतिविधियों से जूझ रहा है परंतु इन सभी समस्याओं के आधारभूत कारण केवल कालेधन की ओर ही इंगित करते हैं। शोध के माध्यम से भारत की अर्थव्यवस्था में कालेधन प्रकोप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस तरह यह हमारे देश के विकास में पैठ जमाए है। आमजन को कालेधन के नुकसान एवं फायदे से अवगत करना है।

भविष्य में शोध:

यह शोध भविष्य में अर्थव्यवस्था पर होने वाले शोधों के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा। विमुद्रीकरण के दौरान जिस तरह सेसमाज में उथल-पुथल हुई, इसके बाद भी जनता ने डटकर सामना किया और पूरी तरह से खुद को झोंक दिया। यह शोध सामाजिक शोध के लिए भी दिशानिर्देश का काम करेगा क्योंकि विमुद्रीकरण के प्रभाव में ज़्यादातर आम जनता ही चपेट में आई हैं। इसके अलावा भविष्यमें अर्थशास्त्र पर होने वाले अध्ययनों में भी इस शोध की भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

सहायक संदर्भ सूची:

- Maddison, Angus (2003). The World Economy: A Millennial Perspective, Development Centre of The Organization for Economic Co–Operation and Development
- Smit, Adam (2005). An Inquiry Into The Nature And Causes Of The Wealth Of Nation. An Electronic Classics Series Publication
- यादव, बी. एस., तबस्सुम, के., और मसूद, एच. (2008). आर्थिक विकास एवं नियोजन. नई दिल्ली: यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
- Ahuja, R. (2007). "Social Problems in India" (2nd Ed). Raipur: Rawat Publications
- सिंह, रामपाल , और कुमार, धर्मेन्द्र (2008). अर्थशास्त्र शिक्षण. मेरठ: राज प्रिंटर्स।

रिपोर्ट:

- आर्थिक सर्वेक्षण (1995), इंडियन इकोनोमिक सर्वे 1994-95, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- Reserve Bank of India, (Mar. 10, 2017). Macroeconomic Impact of Demonetisation, A PreliminaryAssessment(report).https://rbidocs.rbi.org.in/rdocs/Publications/PDFs/MID10031760E85BDAFEFD497193995BB1B6DBE602.PDF
- HDFC Bank Investment Advisory Group, (November 11, 2016). Demonetization and its impact(report).https://www.hdfcbank.com/assets/pdf/Event_Update_Demonetization_and_its_impact.pdf
- Forbes India, (11 march, 2017). Demonetisation - The long and short of it (report). http://www.forbesindia.com/blog/economy-policy/demonetisation-the-long-and-short-of-it/

बेवसाइट संदर्भ:

- https://www.narendramodi.in/hi/-indiadefeatsblackmoney-marks-1-month-of-demonetisation-across-social-media-platforms-533449
- https://hindi.firstpost.com/tag/
- https://hindi.webdunia.com/national-hindi-news/demonetization116120300035_1.html
- https://navbharattimes.indiatimes.com/india/rahul-chidambaram
- https://satyagrah.scroll.in/article//103213the-story-behind-demonetization-of--500and--1000rupee-notes-by-modi-govt
- http://www.bankmantra.in//09/2016Functions-of-RBI-in-Hindi.html
- https://www.rbi.org.in/
- https://hi.wikipedia.org/wiki/
- https://www.patrika.com/business-news/-2percent-discount-in-gst-on-digital-payment-/2024390
- https://khabar.ndtv.com/news/india/demonetization-public-pain-banks-noteban-1640225

- https://hindi.news.18com/news/nation/money-withdraw-less-then-tweenty-thousand-atm-across-country-after-demonitisation-.924866html
- https://m.dailyhunt.in/news/india/hindi/uttar+pradesh-epaperuttar/bhid+to+ghati+lekin+kaish+ki+killat+barakarar-newsid-75937943